ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 67 अंक 6 फरवरी 2020 फाल्गुन 2076 वार्षिक मूल्य 150 रु०

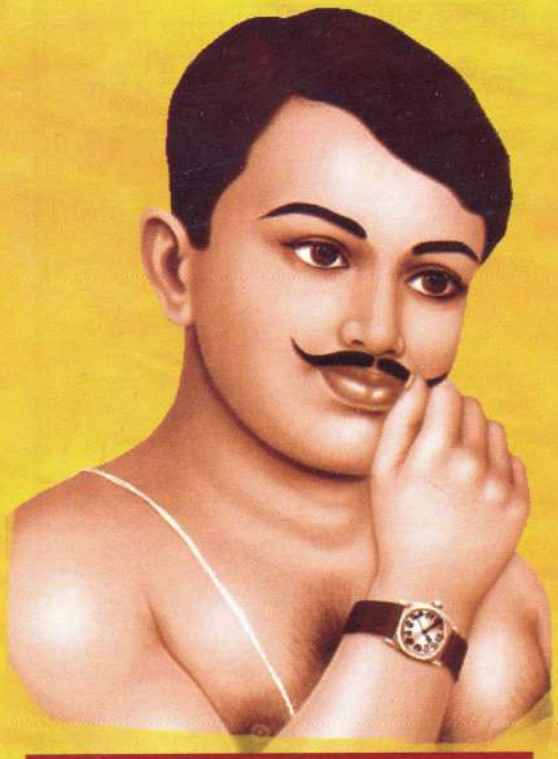

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

शहीद : 27-02-1931

वीर विनायक दामोदर सावरकर

निधन - 26.02.1966

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :67 अंक : 6
फरवरी 2020 विक्रमाब्द 2076
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5119
सृष्टिसंवत्-1, 96, 08, 53, 119

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	विनायक दामोदर सावरकर	4
4.	चन्द्रशेखर आजाद के...	7
5.	महर्षि दयानन्द व कवि...	10
6.	मां की पुकार	12
7.	ये मन्दिर बनाने वाले	18

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

त्वामग्ने मनीषिणः त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः।।

ऋ० ८, ४४, १९।।

विनय

हे अग्ने! तुम्हारा असली प्रीणन करने वाले, तुम्हें अच्छी तरह बढ़ाने वाले तो वे पुरुष होते हैं जो मनीषी हैं, जो मन के ईश्वर हैं, जो अपने मन के पूरे मालिक हैं। मन के गुलाम तो इस संसार में प्रायः सभी लोग होते हैं, पर विरले ही हैं जो मन के स्वामी होते हैं, जो अपने मन को पूरी तरह काबू में रखते हैं। ऐसे मनीषी लोग इस मन के संयम के लिये जो सतत् आत्मबलिदान करते हैं, उन आहुतियों से हे अग्ने! तुम खूब संतृप्त होते हो, खूब प्रदीप्त होते हो। दूसरे हैं जो चित्तियों से, चित्त कर्मों से तुम्हारा संतपर्ण करते हैं। ये चित्त शुद्धि द्वारा और चित्त शुद्धि कराने वाले निष्काम कर्मों द्वारा, तुम्हें बढ़ाते हैं। इस चित्त-शुद्धि और निष्कामता के लिये जो इन्हें आत्मत्याग करना पड़ता है उन आहुतियों से भी हे अग्ने! तुम खूब संतृप्त होते हो, खूब शीर्घ होते हो। यद्यपि तुम्हारा असली प्रचार, तुम्हारी महिमा का विस्तार ये मनीषी और चित्ति वाले लोग ही करते हैं तो भी हमारी वाणियों द्वारा भी-हमारे मंत्र- पाठों, स्तुति-गीतों और कथा चर्चाओं द्वारा भी-कुछ न कुछ अवश्य तुम्हारी महिमा बढ़ती है, तुम्हारा प्रचार होता है। नहीं, यदि ये हमारे पाठ, स्तोत्र बैखरी वाणी से ही नहीं किन्तु अन्दर की वाणियों से भी निकले होते हैं तब तो इनसे भी तुम्हारी महिमा पूरी पूरी ही बढ़ती है, तुम्हारा सच्चा प्रचार होता है। इसलिए हे अग्ने! हमारे आत्माग्ने! तुम हमारी इन वाणियों द्वारा भी बढ़ो, जहां तुम मनीषियों और शुद्ध चित्त पुरुषों के मनों और चित्तों द्वारा बढ़ते हो, वहां तुम हमारी इन वाणियों द्वारा भी बढ़ो, प्रदीप्त होओ।

शब्दार्थ-

(अग्ने) हे अग्ने! (त्वां) तुझे (मनीषिणः) मन के ईश्वर लोग (हिन्वन्ति) प्रीणित करते हैं, बढ़ाते हैं और (त्वां) तुझे [दूसरे लोग] (चित्तिभिः) चिन्तनों से या चित्तशुद्धि के कर्मों से बढ़ाते हैं। तथा (नः) हमारी (गिरः) ये वाणियां भी (त्वां) तुझे (वर्धन्तु) बढ़ावें।

सम्पादकीय.....

गुरुकुल झज्जर ने जनता से क्या लिया और क्या दिये

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का यह १०४वां वार्षिक महोत्सव है। उत्सव करते-करते इतने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, इसलिये अब यह देखना है कि जनता ने जिस भावना से गुरुकुल को अन्न-धनादि देकर उत्साहित किया है, तदनुसार गुरुकुल भी जनता को, देश को, आर्यसमाज को, संस्कृत भाषा को तथा वेदादि सद्ग्रन्थों की सुरक्षा को क्या दे पाया है।

गुरुकुज झज्जर के प्रमुख उद्देश्य और कर्त्तव्य अनेक हैं। जैसे:-

१. प्राचीन आर्ष प्रणाली के द्वारा वेदादि शास्त्रों और संस्कृत भाषा के पठन-पाठन को जीवित बनाये रखना।
२. ब्रह्मचर्य के प्रचार के साथ-साथ जनता में आसन-प्राणायाम-व्यायाम आदि का क्रियात्मक प्रचार करना।
३. जनता में धर्मप्रचार करने हेतु उपदेशक तैयार करना।
४. संस्कारों के महत्त्व और क्रियात्मक रूप को स्थिर रखने के लिए पुरोहित बनाना।
५. स्कूलों, कॉलेजों, ग्रामों और नगरों में यज्ञ तथा धर्मोपदेशों के द्वारा युवा पीढ़ी को उत्साहित करके संस्कारवान् बनाना।
६. संस्कृत-हिन्दी के जनोपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन और वितरण करना।
७. भारत के प्राचीन इतिहास के अन्वेषणार्थ पुरातत्त्व संग्रहालय के आधार पर छात्रों को शोधकार्यार्थ प्रेरित करना।
८. गोरक्षार्थ गोशाला के द्वारा गायों का संरक्षण करना।
९. आयुर्वेदिक औषधालय और चिकित्सालय के द्वारा औषध तैयार करके रुग्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्यलाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना।
१०. प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से कष्टसाध्य रोगों का उपचार करना।
११. अतिथि के रूप में पधारने वाले परोपकारी, विद्वान्, संन्यासी आदि सज्जनों का नि:शुल्क रूप में भोजन-आच्छादन से यथेष्ट सत्कार करना।
१२. ग्रामवासियों में मतभिन्नता से उत्पन्न आन्तरिक कलह को समाप्त करवा कर उन्हें शांतिप्रिय जीवन जीने हेतु प्रेरित करना।
१३. वैदिक संस्कृति सभ्यता और गोरक्षा आदि पर यदि कोई आपत्ति आती है तो उसके निराकरण के लिये सत्याग्रह आदि क्रिया-कलापों के द्वारा यथासंभव आपत्ति को दूर करना।
१४. जनता में भ्रम और अज्ञानवश अवैदिक मान्यताओं और पाखण्डों से होने वाली हानि दिखाकर लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना।

१५. गुरुकुल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक परिश्रम से होने वाले कार्यों के प्रति भी जागरूक और उत्साहित करना इत्यादि।

- गुरुकुल झज्जर से सैकड़ों स्नातक संस्कृत भाषा की शिक्षा प्राप्त करके यथासामर्थ्य विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा के माध्यम से छात्र-छात्राओं को शिक्षित कर रहे हैं। ऐसे शिक्षकों और उपदेशकों में भारत से बाहर विदेशों में सेवा करने वाले भी हैं।
- राजनीति के क्षेत्र में भी गुरुकुल के स्नातक विधायक, सांसद और मन्त्री पद तक प्राप्त कर चुके हैं।
- प्रशासनिक विभाग पुलिस तथा सेना में भी सेवारत हैं और सेना में धर्मगुरु के पदों पर भी विद्यमान हैं।
- लेखक के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष आदि ग्रन्थों के भाष्यकार भी इस गुरुकुल की देन हैं।
- न्यायालयों में भी अधिवक्ता पद को भी सुशोभित कर रहे हैं।
- चिकित्सक के रूप में अनेक स्नातक वैद्य, उपवैद्य आदि की उपाधि प्राप्त करके चिकित्सा द्वारा सेवा कर रहे हैं।
- प्राचीन इतिहास का अन्वेषण करके इतिहास को नई दृष्टि देने वाले स्नातक भी इसी गुरुकुल की उपज हैं।
- योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, कुश्ती, मलखम्भ, लाठी, भाला, तलवार आदि विविधि प्रकार के भारतीय व्यायाम और रक्षा साधनों का क्रियात्मक प्रशिक्षण देने वाले स्नातक भी इसी गुरुकुल से सम्बद्ध हैं।
- आर्षपाठविधि के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले अनेक गुरुकुलों के संस्थापक और संचालक भी इस गुरुकुल के ही स्नातक हैं।
- आर्य प्रतिनिधि सभाओं, सार्वदेशिक सभा तथा परोपकारिणी सभा जैसी अनेक सभाओं के किसी-न-किसी रूप में अधिकारी और सदस्य भी यहां के स्नातक रह चुके हैं और अब भी हैं।
- वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, छन्द, काव्य, आयुर्वेद, इतिहास, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम और समाज सुधार सम्बन्धी संस्कृत-हिन्दी के सैकड़ों ग्रन्थों का प्रकाशन गुरुकुल की ओर से निरन्तर चलता रहता है।

जनता द्वारा प्राप्त सात्विक दान द्वारा गुरुकुल झज्जर यथाशक्ति उपर्युक्त जीवनोपयोगी कार्यों की पूर्ति में सदा ही लगा रहता है। यदि जनता इसी प्रकार गुरुकुल पर कृपादृष्टि रखती रहेगी तो किसी भी कार्य की उन्नति रुकने नहीं पायेगी। जनता के धन का सब प्रकार से सदुपयोग होता रहे, यही गुरुकुल का मुख्य लक्ष्य है।

सरकार की ओर से कोई निरन्तर स्थायी

महान् देशभक्त : विनायक दामोदर सावरकर

यह देशवासियों का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि राजनीतिबाज लोग अपनी राजनैतिक रोटियां सेंकने के लिये देश के महान् देशभक्त क्रांतिकारियों पर सरेआम आक्षेप करने से भी नहीं हिचकिचाते। स्वातंत्र्य वीर दामोदर सावरकर एक ऐसे ही देशभक्त हैं जो इस कुटिल राजनीति का शिकार हो रहे हैं। सच तो यह है कि उनका सारा जीवन ही राष्ट्र को समर्पित था।

१- वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी देशभक्त थे जिन्होंने १९०१ में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु पर नासिक में शोक सभा का विरोध किया और कहा कि वह हमारे शत्रु देश की रानी थी, हम शोक क्यों करें? क्या किसी भारतीय महापुरुष के निधन पर ब्रिटेन में शोकसभा हुई है?

२- वीर सावरकर पहले देशभक्त थे जिन्होंने एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह का उत्सव मनाने वालों को त्र्यम्बकेश्वर में बड़े-बड़े पोस्टर लगाकर कहा था कि गुलामी का उत्सव मत मनाओ।

३- विदेशी वस्त्रों की पहली होली पूना में ७ अक्तूबर १९०५ को वीर सावरकर ने जलाई थी।

४- वीर सावरकर पहले ऐसे क्रातिकारी थे जिन्होंने विदेशी वस्त्रों का दहन किया, तब बाल गंगाधर तिलक ने केसरी में उनको शिवाजी के समान बताकर उनकी प्रशंसा की थी जबकि इस घटना की दक्षिण अफ्रीका के अपने पत्र 'इन्डियन ओपीनियन' में गांधी जी ने आलोचना की थी।

५- सावरकर द्वारा विरोधी वस्त्र दहन की इस प्रथम घटना के १६ वर्ष बाद गांधी जी उस मार्ग पर चले और ११ जुलाई १९२१ को मुंबई के परेल में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया।

६- सावरकर पहले भारतीय थे जिनको १९०५

आर्थिक सहयोग नहीं मिलने पर भी दानी सज्जनों के हार्दिक और आर्थिक सहयोग से गुरुकुल निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है। अत: जनता को भी अपने दान के सदुपयोग पर गर्व होना चाहिये।

२२-२३ फरवरी २०२० को होने वाले इस उत्सव पर पधार कर गुरुकुल के अनेक प्रकार के कार्यों को सभी व्यक्ति स्वयं देख सकते हैं।

-विरजानन्द दैवकरणि

९४१६०५५७०२

में विदेशी वस्त्र दहन के कारण पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज से निकाल दिया गया और दस रुपये जुर्माना लगाया गया। इसके विरोध में हड़ताल हुई। स्वयं तिलक जी ने 'केसरी' पत्र में सावरकर के पक्ष में सम्पादकीय लिखा।

७- वीर सावरकर ऐसे पहले बेरिस्टर थे जिन्होंने १९०९ में ब्रिटेन में ग्रेज-इन परीक्षा पास करने के बाद ब्रिटेन के राजा के प्रति वफादार होने की शपथ नहीं ली। इस कारण उन्हें बेरिस्टर की उपाधि का पत्र कभी नहीं दिया गया।

८- वीर सावरकर पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा गदर कहे जाने वाले संघर्ष को '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' नामक ग्रन्थ लिखकर सिद्ध कर दिया।

९- सावरकर पहले ऐसे क्रान्तिकारी लेखक थे जिनके लिखे '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' पुस्तक पर ब्रिटिश संसद ने प्रकाशित होने से पहले प्रतिबन्ध लगाया था।

१०-'१८५७ का स्वातंत्र्य समर' विदेशों में छापा गया और भारत में भगतसिंह ने इसे छपवाया था, जिसकी एक-एक प्रति तीन-तीन सौ रुपये में बिकी थी। भारतीय क्रान्तिकारियों के लिये यह पवित्र गीता थी। पुलिस छापों में देशभक्तों के घरों में यही पुस्तक मिलती थी।

११- वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जो समुद्री जहाज में बंदी बनाकर ब्रिटेन से भारत लाते समय आठ जुलाई १९१० को समुद्र में कूद पड़े और पुलिस की गोलियों से बचते हुए तैर कर फ्रांस पहुंच गये थे।

१२- सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जिनका मुकद्दमा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में चला, मगर ब्रिटेन और फ्रांस की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नहीं मिला और बंदी बनाकर भारत लाया गया।

१३- वीर सावरकर विश्व के पहले क्रान्तिकारी और भारत के पहले राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने दो आजन्म के कारावास की सजा सुनाई थी।

१४- सावरकर पहले ऐसे देशभक्त थे जो दो आजन्म कारागार की सजा सुनते ही हंसकर बोले-''चलो, ईसाई सत्ता ने हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म सिद्धांत को मान लिया'

१५- वीर सावरकर पहले राजनैतिक बंदी थे जिन्होंने काला पानी की सजा के समय १० साल से भी अधिक समय तक आजादी के लिए कोल्हू चलाकर ३० पौंड तेल प्रतिदिन निकाला।

१६- वीर सावरकर काला पानी में पहले ऐसे कैदी थे जिन्होंने काल कोठरी की दीवारों पर कंकड़ और कायले से कवितायें लिखीं और ६००० पंक्तियां याद रखी।

१७- वीर सावरकर पहले देशभक्त लेखक थे, जिनकी लिखी हुई पुस्तकों पर आजादी

के बाद कई वर्षों तक प्रतिबन्ध रहा।

१८- आधुनिक इतिहास के वीर सावरकर पहले विद्वान् लेखक थे जिन्होंने हिन्दू को परिभाषित करते हुए लिखा कि- ''आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिकां। पितृभ्यू: पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृत:।'' अर्थात् समुद्र से हिमालय तक भारत भूमि जिसकी पितृभू है, जिसके पूर्वज यहीं पैदा हुए वह यही पुण्यभू है, जिसके तीर्थ यहीं हैं, वही हिन्दू है।

१९. वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जिन्हें अंग्रेजी सत्ता ने ३० वर्षों तक जेलों में रखा तथा आजादी के बाद १९४८ में भारत सरकार ने गांधी जी की हत्या की आड़ में लालकिले में बंद रखा पर न्यायालय द्वारा आरोप झूठे पाये जाने के बाद ससम्मान रिहा कर दिया। देशी विदेशी दोनों सरकारों को उनके राष्ट्रवादी विचारों से डर लगता था।

२०- वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जब उनका २६ फरवरी १९६६ को स्वर्गारोहण हुआ तो भारतीय संसद में कुछ सांसदों ने शोक प्रस्ताव रखा तो यह कहकर रोक दिया गया कि वे संसद सदस्य नहीं थे, जबकि चर्चिल की मौत पर शोक मनाया गया था।

२१- वीर सारकर पहले क्रान्तिकारी राष्ट्रभक्त स्वातंत्र्य वीर थे जिनके मरणोपरांत २६ फरवरी २००३ को उसी संसद में मूर्ति लगी जिसमें कभी उनके निधन पर शोक प्रस्ताव रोका गया था।

२२- वीर सावरकर ऐसे पहले राष्ट्रवादी विचारक थे जिनके चित्र को संसदभवन में लगाने से रोकने के लिए राष्ट्रपति को पत्र लिखा गया, लेकिन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने सुझाव पत्र को नकार दिया और वीर सावरकर के चित्र का अनावरण राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से किया।

२३- वीर सावरकर पहले ऐसे राष्ट्रभक्त हुए जिनके शिलालेख को अंडमान द्वीप की सेल्युलर जेल के कीर्ति स्तम्भ से सरकार के मंत्री मणिशंकर अयर ने हटवा दिया था और उसकी जगह गांधीजी का शिलालेख लगवा दिया। वीर सावरकर ने दस साल आजादी के लिए काला पानी में कोल्हू चलाया था जबकि गांधी जी ने काला पानी की उस जेल में कभी दस मिनट चरखा नहीं चलाया।

२४- महान् स्वतंत्रता सेनानी, क्रान्तिकारी-देशभक्त, उच्च कोटि के साहित्यकार, हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान के मंत्रदाता, वीर विनायक दामोदर सावरकर भव्य-दिव्य पुरुष, भारत माता के सच्चे सपूत थे।

(व्हाट्स एप्प पर अज्ञात लेखक द्वारा प्रेषित, साभार)

अमर शहीद श्री चन्द्रशेखर आजाद के संस्मरण

-आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली सरकार

''हां आजाद हैं!''

झांसी में चन्द्रशेखर आजाद मा. रुद्रनारायण के घर रहते थे। झांसी जब पुलिस की नजरों में बहुत चढ़ने लगा, तो मास्टर जी ने सोचा, आजाद का अब झांसी में रहना खतरे से खाली नहीं है। जगह तलाश की गई और योजना बनी कि आगे से आजाद ''हरिशंकर ब्रह्मचारी'' के रूप में हिमरपुरा गांव में रहें। यह गांव सातार नदी के किनारे बसा है। नदी के तट पर ही हनुमान् जी का एक मन्दिर था। उसी के पास एक कुटियानुमा कोठरी भी बनी थी। आजाद ने लंगोटी लगाई, कमर में मूंज की मेखला कसी और ऊपर से कम्बल ओढ़ा। बस बाल ब्रह्मचारी का रूप बनाकर (दरअसल ब्रह्मचारी तो वे थे ही) मन्दिर की उस कुटी में डेरा लगा लिया। कम्बल तथा रामायण की एक छोटी पोथी-यही उनका सारा सामान था। भोजन का कोई प्रबन्ध था नहीं, ईश्वर पर ही भरोसा था।

बीच-बीच में वे ओरछा चले जाया करते। एक बार ''ब्रह्मचारी महाराज'' (आजाद) ओरछा से वापिस आ रहे थे, साथ में एक अन्य साधु भी था। अचानक मार्ग में दो पुलिस वाले उन्हें मिले। सिपाही पूछने लगे तुम कौन हो कहां से आये हो, कहां जावेंगे? क्या नाम है? आजाद उन्हें बातों में टालते रहे। परन्तु सिपाही बोले-तुम आगे नहीं जा सकते! ठहरो! आजाद हंस पड़े और बोले, ''वाह बच्चा क्या बात कही, क्यों साधु सन्तों का रास्ता रोकते हो। एक सिपाही ने तुक्कता भिड़ाते हुए कहा-तू तो आजाद है न? तब आजाद बोले-''हम आजाद तो हैं ही, भला हमें दुनिया का क्या बन्धन है? हनुमान् बाबा का नाम जपते हैं, जो मिल जाता है उसी में मस्त रहते हैं।''

सिपाही बोले-थाना चलो सब पता चल जायेगा। आजाद ने कहा-बच्चा क्यों सन्तों को सताते हो? आज बजरंग बली का चोला बदलना है, विलम्ब होने से हनुमान् जी कोप करेंगे। सिपाही बोले-पहले थाना चलो, चोला बाद में चढ़ाना। आजाद बिगड़ उठे, बोले तो लो हम चले, तुम्हारा दारोगा हनुमान् बली के सामने क्या है? जो उसे सलाम करने जांय। दरोगा को सलाम तुम बजाओ और क्रोध से लाल पीले होते ब्रह्मचारी जी ये गये वो गये।

तब एक सिपाही ने दूसरे से कह कर संतोष कर लिया कि ''जा पर तो महावीर जू को सत्त आ गया दीखै मुझे'' और वे अपनी राह चलते बने।

''धोबी हों हजूर'':

ये सभी क्रान्तिकारी एक मकान में रहते थे तथा उसी मकान में बम भी बनाए

जाते थे, असावधानीवश बम विस्फोट हो गया। विस्फोट से कमरे की छत तथा दरवाजे उड़ गये। उस समय आजाद की स्फूर्ति और तत्परता देखने लायक थी। कारतूस, पिस्तौल आदि सूटकसों में ठूंसे। यशपाल, दुर्गा भाभी, सुशीला दीदी सभी को आदेश दिया कि जितना भी सामान ले जा सको उठाकर चल पड़ो। स्वयं डेढ मन वजनी दो सूटकेस उठाकर पैदल ही चल पड़े। एक सूटकेस भाभी के हाथ में भी था एक सुशीला दीदी के हाथ में, चलते समय एक सफाई जमादार ने रास्ता रोका, तो आजाद ने पिस्तौल आगे कर उसे पीछे धकेल दिया। बस, रास्ता साफ था। आजाद जब दुर्गा भाभी आदि को लेकर अचिन्त्याराम के मकान में पहुंच गये, तब उन्हें याद आया कि दुर्गा भाभी तथा सुशीला दीदी के सूखते हुए वस्त्र कोठी नं० ९ में ही रह गये। बस आजाद ने बिना कुछ बताये, साईकिल उठाई, रिवाल्वर जेब में रक्खा और बहावलपुर रोड वाली कोठी के आगे पहुंच कर देखा, अभी पुलिस आई नहीं है। आजाद कोठी में सीधे घुसे, अन्दर से भाभी दीदी की साड़ियां,पेटीकोट आदि रस्सी से उतारे, गठरी बांध, बाहर आकर आगे साईकिल के हैन्डल पर लटका बंगले के पिछवाड़े से निकले ही थे कि सामने से गोरों का दल आ पहुंच। आजाद रुक गये। गोरों ने पूछा-''मैन कहा जाटा हाय? तुमारा नाम?'' आजाद ने ठेठ धोबियों के अन्दाज में कपड़े धोने की प्रक्रिया प्रदर्शित करके बड़ी अजीजी से समझाया, धोबी हों हजूर। कपड़ा धोवत हों। गोरों ने पूछा-किडर से कपड़ा लाया? आजाद ने बेझिंझक कहा, ''हजूर इस बंगले के साहब का धोबी हों'', बताते वक्त बजाय कोठी नं० ९ के, आजाद ने दूसरे बड़े बंगले की तरफ इशारा कर दिया था और गोरे उसे देहाती धोबी मानकर आगे बढ़ गये। बाद में आजाद ने बताया कि ''यदि गोरे न मानते तो जेब में रिवाल्वर था ही-गोली चलती। लड़ते-लड़ते मर जाता या जिन्दा बचकर निकल भी सकता था। पर यह शरीर जिन्दा उनके हाथ नहीं आना था।''

चांदनी चौक में डाका :

उन दिनों आजाद दिल्ली के एक कालेज के छात्रावास में अपने साथियों के पास ठहरे हुए थे। दल के पास पैसों की बड़ी कमी थी। तब निश्चय हुआ कि चांदनी चौक स्थित गाडोदिया स्टोर नामक बैंक में डाका डाला जाय। क्रान्तिकारियों के मार्ग में एस.पी. का कार्यालय भी था। रात को ११ बजे के लगभग ये लोग पैदल ही बैंक में गये। बैंक में जो लोग काम कर रहे थे वे इन लोगों को देख कर घबरा गये। तब ये लोग बोले रुपये हमें सौंप दो। कर्मचारियों ने रुपये उन्हें दे दिये, साथ में सोने के जेवर भी देने लगे, तब आजाद ने जेवरों को दूर हटाते हुए कहा-हम कोई डाकू नहीं हैं, हम क्रान्तिकारी हैं। चांदी के रुपयों की गांठ बांधकर वे वहां से चलते बने तथा रुपयों को गाड़ी में रख, दिल्ली से फरार हो

गये। जब पुलिस को इस बात की सूचना मिली तब पुलिस वहां पहुंची।

सेठ की सहृदयता :

घटना का वर्णन करते हुए आजाद अपने साथी जगदीश से बोले-सेठ भला आदमी लगता है। डकैती से पहले इससे कर्जा मांगा गया था हमने कहलवाया था कि पार्टी को पांच हजार रुपये की आवश्यकता है, दे दें, बाद में लौटा दिए जायेंगे। इस काम के लिये कालिया को भेजा गया था। सेठ जी को विश्वास नहीं हुआ तथा उन्होंने रुपया देने से इन्कार कर दिया। तब मजबूरन हमें यह एक्शन करना पड़ां। अब बेटा ने २० हजार रुपया दिया। अब तुम दिल्ली छोड़ दो।

बाद में पता चला कि सेठ ने अपने किसी कर्मचारी को क्रान्तिकारियों की पहचान करने से रोक दिया। सेठ ने पुलिस के सामने कहा-हमें कोई नुकसान नहीं हुआ।

गुरु भक्ति :

सिजारुद्दीन खां के पास आजाद ने ड्राईवरी सीखी थी। एक बार खां साहब की बेटी की शादी की तैयारी हो रही थी। पता चला कि ओरछा में घी सस्ता मिलता है, लेकिन लाया कैसे जाये। रियासत से घी लाने पर रोक थी, अत: आम रास्ते से घी नहीं आ सकता था। चुंगी वाले रास्ते में रोक लेते थे। उनसे बचकर ही लाया जा सकता था। जब यह बात आजाद को मालूम हुई तो उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा- इसमें क्या मुश्किल है, घी हम लायेंगे। पूछा गया-आप कैसे लायेंगे, सवारी से लाया नहीं जा सकता। आजाद बोले- वाह! ारी रक्खी कहां है वहां, हम कांवड़ से घी जंगल के रास्ते लायेंगे। 13-14 मील का रास्ता है, क्या इतना भी नहीं चल सकते। लेकिन 18 सेर वजन के दो पीपे भी ढोने हैं। लेकिन आजाद के शब्दकोष में कठिन शब्द था ही नहीं। वे नहीं माने और बोले-गुरु की शादी में क्या हम इतना भी नहीं कर सकते?

आजाद ओरछा रामानन्द ड्राईवर को साथ लेकर गये। दो कांवड़ तथा चार पीपे लेकर गये। चार पीपों में 18-18 सेर घी भरकर 13-14 मील जंगल के रास्ते से पैदल ही लेकर आये। उस्ताद सिजारुद्दीन खां गद्‌गद् हो गये। उन दिनों आजाद ड्राईवर रामानन्द के साथ किराये के मकान में ही रहते थे।

उस समय न तो रामानन्द तथा न ही सिजारुद्दीन को यह पता था कि हरिशंकर एक फरार क्रान्तिकारी है तथा उस पर पांच हजार रुपये का सरकार ने इनाम रक्खा है।

बाद में जब आजाद 27 फरवीर 1931 को, इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क (अब आजाद पार्क) में गोली चलाते-चलाते स्वर्ग सिधार गये, तब अंग्रेज सरकार ने सिजारुद्दीन से ही आजाद की पहचान करवाई। तब सिजारुद्दीन को पता चला कि उनसे ड्राईवरी सीखने वाला "हरिशंकर" कितना देशभक्त था।

सम्पर्क सूत्र : 111/19, आर्यनगर, झज्जर
मो.नं. 9996227355

महर्षि दयानन्द व कवि मैथिली शरण गुप्त

जनवरी २०२० से आगे.....

चतुर्थ समुल्लास के भाव
(आर्य्य स्त्रियां)

-केवल पुरुष ही थे न वे, जिनका जगत् को गर्व था,
गृह देवियां भी थीं, हमारी देवियाँ ही सर्वथा।
था अत्रि-अनसूया-सदृश, गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दाम्पत्य में वह सौख्य था, जो सौख्य था अपवर्ग में।
-रहते यवन थे रक्तरंजित, तीक्ष्ण असि ताने खड़े,
चोटी नहीं तो हाय! हमको शीश कटवाने पड़े।
जीते हुए दीवार में, हम लोग चुनवाये गये,
बल से असंख्यक आर्य्य, यों इस्लाम में लाये गये।
-हे आर्य्य संन्तानो ! उठो, अवसर निकल जाये नहीं,
देखो, बड़ों की बात जग में, बिगड़ पायेनहीं।

१४ वेद -सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास से

-फैला यहीं वो ज्ञान का, आलोक सब संसार में,
जागी यहीं थी जग रही, जो ज्योति अब संसार में।
इञ्जिल और कुरान आदिक थे न तब संसार में,
इसको मिला था दिव्य वैदिक बोध जब संसार में।
-विख्यात चारों वेद मानों, चार सुख के सार हैं,
चारों दिशाओं के हमारे, वे जय-ध्वज चार हैं।
वे ज्ञान गरिमा सागर हैं, विज्ञान के भण्डार हैं,
वे पुण्य पारावार हैं, आचार के आधार हैं।
-उस वेद के उपदेश का, सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,
सौहार्द और मतैक्य हो, अविरुद्ध मन का भाव हो।
सब इष्ट फल पावें परस्पर, प्रेम रख कर सर्वदा,
निज यज्ञ भाग समानता से, देव लेते हैं यथा।
-यह पापपूर्ण परावलम्बन, चूर्ण होकर दूर हो,
फिर स्वावलम्बन का हमें, प्रिय पुण्यपाठ पढाइए।
व्याकुल न हो, कुछ भय नहीं,तुम सब अमृतसन्तान हो
यह वेद की वाणी हमें, फिर एक बार सुनाइए।

१५ यज्ञ सत्यार्थप्रकाश ४ समुल्लास से

-निर्मल.पवन जिसकी शिखा को, तनिक चंचल कर उठी
होमाग्नि जल कर द्विज गृहों में, पुण्य परिमल भर उठी।
प्राची दिशा के साथ भारत भूमि,जगमगकर उठी,
आलस्य में उत्साह की-सी, आग देखो लग उठी।

१६ गुरुकुल सत्यार्थप्रकाश ३ समुल्लास से

-विद्यार्थियों ने जागकर, गुरुदेव का वन्दन किया,
निज नित्य कृत्य समाप्त करके, अध्ययन में मन दिया।
जिस ब्रह्मचर्याश्रम बिना हैं, आज हम सब रो रहे।
उसके सहित वे धीर होकर, वीर भी हैं हो रहे।

१७ व्याकरण

-निकल जहां से आधुनिक वह, भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी, संस्कृत समान महत्व है।
पाणिनि सदृश वैयाकरण, संसार भर में कौन है ?
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर, उत्तरोत्तर मौन है।

१८ वैद्यक

-उस वैद्य विद्या के विषय में, अधिक कहना व्यर्थ है,
सुश्रुत,चरक रहते हुए, सन्देह करना व्यर्थ है।
अनुवादकर्ता आज भी, उपहार उनके पा रहे,
हैं आर्य्य आयुर्वेद के, सब देश सद्गुण गा रहे।

१८ छान्दोग्य उपनिषद्

-हैं मद्यपी कायर न मेरे, राज्य में तस्कर कहीं,
व्यभिचारिणी तो फिर कहां, जब एक व्यभिचारी नहीं।
यों सत्यवादी नृप बिना संकोच कहते थे यहां,
कोई बता दे विश्व में, शासक हुए ऐसे कहां ?

२०. उपनिषद्

-जो मृत्यु के उपरान्त भी, सबके लिए शांतिप्रदा,
है उपनिषद् विद्या हमारी, एक अनुपम सम्पदा।
इस लोक को परलोक से, करती हुई एकत्र है,

क्या हम कहें, उसकी प्रतिष्ठा, हो रही सर्वत्र है।
(उपनिषदों के प्रत्येक पद से गम्भीर और नवीन विचार उत्पन्न होते हैं और सबसे उत्कृष्ट, पवित्र और सच्चे भाव विद्यमान हैं। भारतीय वायुमण्डल हमें घेरे हुए है और आत्माओं के अनुरूप विचार भी हमारे चारों ओर हैं। समस्त संसार में मूल पदार्थों को छोड़कर किसी अन्य विद्या का ज्ञान ऐसा लाभदायक और हृदय को उच्च बनाने वाला नहीं है, जैसाकि उपनिषदों का। इसने मेरे जीवन को शांति दी और यह मृत्यु के समय भी शान्ति देगा)-जर्मन तत्ववेता-स्कोपनहार

२१. दर्शन

-उस दिच्य दर्शन शास्त्र में है, कौन हमसे अग्रणी ?
यूनान, युरूप, आदिक हैं, हमारे ही ऋणी।
पायें प्रथम जिनसे जगत् ने, दार्शनिक सम्वाद हैं,
गौतम, कपिल, जैमिनि, पतञ्जलि, व्यास और कणाद हैं।
(यूरोप के प्रथम दार्शनिक प्लूटो और पायथागोरस दोनों ही दर्शन शास्त्र के सम्बन्ध में भारतवासी हिन्दुओं के निकट सब तरह से ऋणी हैं) -मोनियार विलियम्स

२२. सूत्रग्रन्थ

-उन सूत्र ग्रन्थों का अहा! कैसा अपूर्व महत्व है ?
अत्यल्प शब्दों में वहां, सम्पूर्ण शिक्षा तत्त्व है।
उन ऋषिगणों ने सूक्ष्मता से काम कितना है लिया,
आश्चर्य है, घट में उन्होंने सिन्धु को है भर दिया।

२३. गीता

-यह क्या हुआ कि अभी अभी, तो रो रहे थे ताप से,
हैं! और अब हंसने लगे, वे आप अपने आप से।
ऐं क्या कहा, निज चेतना पर आ गई उनको हँसी,
गीता-श्रवण के पूर्व भी, जो मोह-माया में फँसी।

२४. राष्ट्रभाषा

-है राष्ट्रभाषा भी अभी तक, देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जना सकें, जिसमें परस्पर सब कहीं।
इस योग्य हिन्दी है तदपि, अब तक न निज पद पा सकी,
भाषा बिना भावैकता अब तक, न हममें आ सकी।
-यों तो स्व-भाषा सिद्धि के, सब प्रान्त हैं साधक यहां,
पर एक उर्दूदाँ अधिकतर, बन रहे बाधक यहां।
भगवान् जाने देश में, कब आयेगी अब एकता,
हठ छोड़ दो हे भाइयो! अच्छी नहीं अविवेकता।
(गुप्त जी के समय उर्दू वाले हिन्दी विरोधी थे, राज्याश्रय पाकर अब यही काम मैकाले के मानस पुत्र अंग्रेजीदाँ कर रहे हैं।)

२५.आदर्श स्वामी दयानन्द

-श्री राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती।
उत्पन्न करती है अभी, यह मोदिनी ऐसे व्रती।
साफल्यपूर्वक है जिन्होंने, स्वमत संस्थाएं रची,
है धूम सारे देश में, जिनके विचारों से मची।

२६. यमुना स्तम्भ

-वह सिन्धु बचा अभी तक, दक्षिण मन्दिर बचे,
कब और किसने, विश्व में, यों शिल्पचित्र कहां रचे ?
वह उच्च यमुना स्तम्भ थे, लोहस्तम्भ युक्त निहार लो
प्राचोन भारत की कला-कौशल्य-सिद्धि विचार लो।

टिप्पणी :

२ (ख) यह हमारी आँखें खोलकर बिना सन्देह के कब और किसने, विश्व में, यों शिल्पचित्र कहां रचे ? वह उच्च यमुनास्तम्भ थे, लोहस्तम्भ युक्त निहार लो, प्राचीन भारत की कला-कौशल्य-सिद्धि विचार लो।
हिन्दू लाग उस समय लोहे के इतने बड़े खम्भे बनाते थे जो कि योरुप में इधर के समय भी नहीं बने हैं। यह बात भी कम आश्चर्यजनक नहींकि २४०० वर्षों से भी अधिक हवा और पानी में रहकर उसमें अभी तक मोर्चा (जंग) नहीं लगा।
डॉ. फर्गुसन,योरोप के इतिहासकार

-मेजर रतन सिंह यादव (सेवानिवृत)
जखाला, रेवाड़ी 9050341006

मां की पुकार

-महन्त चन्द्रनाथ योगी

नवम्बर २०१९ से आगे.....

''मैं इस विचार से कि थानेदार मेरी निर्बलता को ताड़ न जाय खिलखिला कर हंसने लगा।''

उसने भी हंस कर कहा-''वाह जनाब वाह। यह खूब रही, जेल जाने के लिए इतनी खुशी ?''

मैंने कहा, ''यही तो वह दिन है जिसकी प्राप्ति के लिये महीनों से कठिन तपस्या की जा रही थी। ''

सन् 1930 के समय कांग्रेस के लगभग सभी आदमी ऐसे होते थे जो वारन्ट आने पर अपने आपको छिपाने या कहीं भाग निकलने की कोशिश नहीं करते, बल्कि ये लोग इतने ईमानदार, इतने निर्भीक और ऐसे अपनी आन के पूरे होते थे कि अगर इनको पत्र के द्वारा भी बुलाया जाय तो कहीं भी हाजिर होकर अपने आपको गिरफ्तार करा देंगे और इनकी यह सच्चाई सरकारी मुलाजिमों से भी छिपी हुई नहीं है। इसलिये तो ये लोग चाहे थानेदार हो, हैड कांस्टेबल हो, कोई हो जिसे चाहा वारंट दिखलाया और साथ ले आये। लेकिन फिर भी चींटियों की तरह पैंतीस करोड़ जन समूह से परिपूर्ण इस विशाल देश में यह बात सोलह आने सच नहीं उतरती। कहीं न कहीं गिरफ्तारी के वक्त इकट्ठे हुए जनसमूह में ऐसे लोग निकल ही आते हैं जो उत्तेजित होकर झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं और किसी भी भले आदमी को गिरफ्तार करते समय इन लोगों को कुछ न कुछ आशंका अवश्य रहती थी। उसने मेरे विषय में सोच रखा था, मैं अकेला हूं और ये तीन चार। इसके अलावा कि इनका इस गांव में तथा आसपास में काफी असर है। अगर चलने से इन्कार कर बैठे या और कोई बात हो जाय तो कम से कम मुश्किल जरूर हो सकती है। इसलिये जब तक मेरे मददगार-चौकीदार, नम्बरदार और मुखिया न आ जायें तब तक इन्हें वारंट की बात छिपाये रखूंगा। चलने की जल्दी नहीं करूंगा। लेकिन एकाएक मेरे यह पूछ बैठने पर कि आज आप इधर कैसे आये ? दारोगा साहब पशोपेश में पड़ गए। उसने सोचा अगर सच कहूं तो मेरे काम में कुछ अड़चन हो सकती है। और अगर झूठ कहूं तो उसका अभी थोड़ी ही देर में भांडा फोड़ हो जाएगा। उसकी बाबत मुझे यह क्या कहेंगे ? यों ही समझेंगे न, कि मैंने डरकर झूठ बोला। बस यह कल्पना उसके दिमाग में ही आते उसका मस्तक झुक गया था। मुझे उस वक्त तो नहीं पर गिरफ्तार होने के बाद ठीक मालूम हुआ कि मेरे पूछने पर क्यों उसके चेहरे का भाव पलट गया था। वह सच तो कहना नहीं चाहता था और झूठ बोलने से शर्मिन्दा होने की आशंका थी। वह बुजदिल था आखिर झूठ ही बोल गया। उसने अपने रोजमर्रा वाले इस ख्याल से

काम लिया कि-सरकारी काम में और फिर पुलिस को क्या झूठ? झूठ तो हमसे मुहब्बत करती है और उसका पाप हमसे सौ कोस दूर रहता है।

ठीक इसी समय पीछे रहा सिपाही तथा चौकीदार वगैरा उसके मददगार लोग भी आ गये और सलाम करके बाहर बैठ गये। अब उसके चेहरे पर कुछ रौनक की झलक दिखाई दी। वह मुस्कराया और मूढे से उठता हुआ बोला-अच्छा तो जनाब चलिये अब देर हो रही है।

मैंने कहा अभी कहां? अभी तो आपको वह दूसरा काम भी तो करना है, पहले उसे निपटाइये।

उसने कहा-नहीं बस आपको ही लेने आया था।

मैंने कहा तो फिर बात झूठी रही।

उसने शर्मिन्दा सा होकर खिसयाते हुए कहा-नहीं वह काम कभी फिर करूंगा, आज देर हो गई है।

मुझे गिरफ्तार करने की वजह से तो उसे कोई रंज नहीं था पर उसकी झूठ से मुझे घृणा पैदा हो गई थी। इसीलिये उसे और भी शर्मिन्दा करने के उद्देश्य से मैंने हंसकर कहा-इसमें तो कोई शक नहीं, था तो वह काम भी जरूरी ही, पर मेरी गिरफ्तारी का यह काम इतना स्पेशल है कि इसके लिये हत्या जैसे संगीन जुर्म के काम भी पीछे छोड़ने पड़ रहे हैं।

अबकी बार वह और कुछ भी न बोल कर एक प्रकार की खुश्क हंसी हंसता हुआ दरवाजे से बाहर हो गया और वहां खड़ा होकर अपने पीछे आने के लिए मेरी प्रतीक्षा करने लगा।

मैं दो दिन पहले अपने काम का चार्ज शिवनाथ को दे चुका था और सब तरह से तैयार हो गया था। अतएव फौरन उसके पास पहुंच कर आगे को अपना हाथ बढाते हुए मैंने कहा-लीजिये अब मुझे अच्छी तरह गिरफ्तार कीजिये।

उसने कहा-क्या हथकड़ी? नहीं उसकी क्या जरूरत है। आप तो कांग्रेसी हैं न, इसलिये हम लोग उन्हें लाये तक नहीं।

मैंने कहा तो फिर यह नकली गिरफ्तारी है? वह हंस पड़ा और बोला-हां, आइये। हम दोनों चलने लगे। न जाने कैसे डेरे के बाहर कई आदमी इकट्ठे हो गये थे जिनमें मेरे एक काम के विरोधी दूसरे जमीदार लाला माधो प्रसाद के कारिन्दे साहब भी थे। यह महाशय हाकिमों की वाहवाही लूटने के लिये रोजमर्रा मेरी शिकायतें कर एड़ी चोटी का पसीना एक किए देते थे और इस बात की बहुत ही इच्छा रखते थे कि वह दिन कौन सा होगा जिससे मुझे बड़े घर जाते देखेंगे। बस वो ही दिन आज था। वह मुस्कराते हुए आगे बढे और दारोगा साहब के सामने खड़े होकर उन्हें दूध वगैरा पीने के लिये पूछने लगे।

अपनी मनचाही पूरी करने के कारण

मानो उसका दिल अन्दर से तो थानेदार को बार-बार धन्यवाद दे ही रहा था, पर उसको इतनी अधिक प्रसन्नता हुई थी कि उसके बदले में उसे दूध वगैरा पिला कर प्रकट पुरस्कार भी देना चाहते थे। इस महाशय की इस समय की हंसी का जो मतलब था उसे समझते हुए मुझे कुछ भी देर न लगी। उसका भाव यह था, मुझे गिरफ्तार कराने का सारा दारमदार मानो वह बेवकूफ अपने ऊपर ले रहा था और इसीलिये प्रसन्न हुआ मानो अपने मन-मन में कर रहा था। देखा भी, बड़े घर भिजवा दिया कि नहीं.....। यद्यपि उस दिन की प्राप्ति के लिये मैंने एड़ी चोटी का पसीना एक कर दिया था और आज मेरी इच्छा पूर्ण होने के कारण मुझे अपार आनन्द हो रहा था, लेकिन जहां मेरी यह हालत थी वहां उसकी भी वैसी थी क्योंकि उसकी भी इच्छा पूरी हुई थी। अतएव मैंने अपने आपको सौ समझाया, संभाला और शान्त रखना चाहा, पर न जाने कैसे मेरे हृदय में यह ईर्ष्यात्मक अग्नि पैदा हो गई थी कि क्यों इसकी मनचाही पूरी हुई। हठात् मानो मेरे अन्दर से आवाज आई, दुष्ट कहीं का तुमने गिरफ्तार करा दिया, मैंने काम ही ऐसा किया था तो गिरफ्तार हुआ? तुम्हारी क्या मजाल थी जो मुझे गिरफ्तार करा देते?

थानेदार का घोड़ा तैयार था और मेरा सांईकिल, दोनों सवार हुए और चल दिये।

चलते वक्त ही उसी महाशय ने मुझे ताना लगाने की गर्ज से उन पास में खड़े हुए लोगों से हंसकर कहा-अब तुम बोलो महात्मा गांधी की जय।

सचमुच लगभग सब आदमी बोल उठे-महात्मा गांधी की जय। वह लज्जित हुआ और मैं हुआ प्रसन्न। मन में संकल्प हुआ और ताना ही सही, पर यह भी एक काम की चीज साबित हुआ। इसके बहाने से महात्मा गांधी की जय तो बोली गई। महात्मा गांधी की जय का मतलब कांग्रेस की जय। चलो यह भी अच्छा हुआ ऐन ठीक मौके पर एक विरोधी द्वारा ही उसका नारा सुनने को मिला।

लेकिन इस जयकारे ने लोगों को चौकन्ना कर दिया। वे घरों से बाहर निकल कर मेरी तरफ दखने लगे। वारंट निकलने की चर्चा कई दिन से चल रही थी, इसलिये सच्चा हाल समझने में किसी को कुछ भी देर न लगी।

कुएं पर पानी भरने वाली कई स्त्रियां आपस में बातें कर रही थी। एक ने कहा ले बोलो, घी माँडे नहीं खाये गये। गेहूं की रोटियां नहीं खाई गई। दूसरी ने कहा-उसके लिए फौलाद का जिगर चाहिये पर इन्होंने भी तो बहुत उबलती फैंक रक्खी थी, भला ये क्या कर देंगे? यों ही मस्ती लग रही है।

तीसरी ने कहा-क्या अपने लिये? लोगों के ही वास्ते तो। जमीदार हैं भला इनके किस बात की कमी थी।

चौथी ने भी कहा था जरूर, पर तब तक हम इतनी दूर चले गये थे कि उसका मैं कुछ भी मतलब न समझ सका। खैर चौथी ने

कुछ भी कहा हो लेकिन पहली दोनों के कथन से जहां यह बात प्रकट होती थी कि वे मेरे इस काम को बेवकूफी भरा समझ रही थी।

वहीं तीसरी महिला इसी को उचित न्यायसंगत और परोपकारी भी समझती थी। आह! उसका यह वाक्य क्या अपने लिये, लोगों के ही वास्ते तो ?-कितना प्रिय कितना सारगर्भित और कितना सत्य था मानो मेरे अन्दर घुसकर उसने पहले से ही मेरे हृदय को टटोल कर देख रक्खा था। मैं गौरव से फूल उठा, रोमांच हो आया, हृदय से मानों इसी वाक्य की ध्वनि निकलने लगी और मुंह से भी आहिस्ते-आहिस्ते बार-बार इसी को दुहराने लगे लोगों के ही वास्ते तो हम एक छोटे से राजबाहे की बहुत ही सकड़ी (भीड़ी) पटड़ी पर दौड़े जा रहे थे, रास्ते में कई एक अड़चनें पड़ती थी, पता नहीं मैं उन्हें कब और कैसे पार कर गया। इस बात का स्मरण होते ही मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ और एक-एक कर उन खराबियों का मानसिक संशोधन करने लगा। ठीक इसी सिलसिले से मेरी दृष्टि फिर वापिस लौटकर गांव में आ घुसी और सहसा उन कारिन्दे साहब की हंसी का फिर स्मरण हो आया। घृणा से मेरा मस्तक तमतमा उठा, दांत होठों को चबाने लगे, हृदय में मीठी-मीठी जलन सी पैदा हो गई। मुंहसे आपो आप सहज-सहज आवाज निकलने लगी-बेवकूफ ? नासमझ ?-अगर हमारी कोशिशें कामयाब हो गई तो क्या तुम भी आजाद न हो जाओगे।

अब मेरा ध्यान इस बात पर जम गया, मैं उनकी हंसी का असली कारण ढूंढ निकालने मे दत्तचित्त हो गया। मन ने कहा, क्या सचमुच ये लोग आजादी नहीं चाहते हैं ? या वैयक्तिक द्वेष के कारण ही ऐसी गद्दारी करते हैं ? खूब जांच हुई, अन्त:करण में प्रवेश कर उसका एक एक कोना और एक एक परमाणु खोज डाला, उसमें जो बात समाई हुई थी वह यि थी कि हां आजादी तो ये भी चाहते हैं, भला कौन ऐसी अच्छी चीज को न चांहेगा, लेकिन आपसी द्वेष के सामने उसे ये कुछ भी महत्व नहीं देते हैं। ओह, यह कल्पना कितनी नीरस, कितनी स्वार्थमयी और कितनी मूर्खता प्रकट करने वाली थी। अब मेरी दृष्टि कुछ व्यापक होने लगी, हिन्दुस्तानभर में फैलकर ऐसे-ऐसे जी हुजूर लोगों की मनोवृत्ति की जांच करने लगी। आह, मेरा अन्त:करण मुर्झाने लगा, मेरे चारों ओर नैराश्य का मानों दरियाव बहने लगा। स्वांस शीघ्र गति से चलने लगा। जी घबराया, मैं कह उठा-सचमुच अभी हमारे इस अभागे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो खुदगर्जी के कारण देश को जहुन्नम में पहुंचा सकते हैं। हृदय उझलने लगा और दयनीय स्वर से प्रार्थना करने लगा-हे परमेश्वर इन्हें सुबुद्धि दे और इस अभागे देश-अचानक थानेदार ने पुकार कर कहा-जरा आहिस्ते-आहिस्ते चलियेगा।

मैं कुछ भूल सा गया था थानेदार की

आवाज से एकाएक मेरी कल्पना का स्रोत भंग हो गया। अब जाकर मुझे मालूम हुआ कि वह भी मेरे पीछे है और मैं गिरफ्तारी की हालत में चल रहा हूँ मैं अपने भाव में लीन हुआ साईकिल दौड़ाये जा रहा था और वह अपने घोड़े को दुड़की छोड़ रहा था। बेचारा हाँफ गया था, उसने मजबूर होकर मुझे चेतावनी दी, जिससे हम दोनों सहज सहज चलने लगे।

कुछ देर में श्वांस ठिकाने आने पर घोड़ा बराबर लगाकर उसने कहा-आखिर आप भी बड़े घर चल ही दिये। मैंने कहा आपने आखिर मुझे बड़े घर भेज ही दिया। मैं क्या करता मजबूर था। मैंने तो अपने इलाके से बहुत ही कम रिपोर्ट की थी, लेकिन और मुकामांत से आपके खिलाफ काफी शिकायतें पहुंची, इसी से मजबूर होकर हाकित इलाका को वारंट जारी करना पड़ा है।

आप मजबूर कहां थे, आपने तो शौक से यह काम कराया है, आप कहते थे न कि मैंकई दिन से तैयारी कर रहा हूं (कुछ हंसकर) नहीं वह तो आपके कहने के ऊपर था, वरना असल बात तो यह है जो आपको खुद भी मालूम हो जायेगी कि मेरी रिपोर्ट पर आपकी गिरफ्तारी नहीं हुई है। अगर शुरू से ही मैं आपकी ठीक-ठीक रिपोर्ट भेजता तो आप कभी के गिरफ्तार हो गये होते। और हां-हाकिम इलाका ने एक बार आपको आगाह भी तो किया था न?

नहीं मुझे कोई चेतावनी नहीं मिली। हां हमारे स्वामी जी के पास बोहर (रोहतक) एक चिट्ठी जरूर गई थी कि तुम्हारे चेले बगावत फैला रहे हैं उन्हें खामोश करो वरना गिरफ्तार किये जायेंगे। फिर उन्होंने आपको क्या लिखा?

उन्होंने लिखा था कि हमारे पास सहारनपुर के मजिस्ट्रेट डियूटी कलकटर साहब बाबूराम यादव की चिट्ठी आई है कि तुम बगावत फैला रहे हो, इसलिये अगर बाज नहीं आये तो दो सप्ताह के बाद फौरन गिरफ्तार कर लिये जाओगे। अगर तुमने अपना दिल खूब समझ कर कड़ा कर लिया है तो हमें कुछ कहना नहीं है, वरना आपनी रफ्तार ढीली करो और जमींदारी के काम में मन लगाओ।

फिर इसके जवाब में आपने क्या लिखा?

मैंने लिख दिया था कि मैंने अपने दिल को खूब समझा लिया है और मातृभूमि के लिये सब तरह की विपत्ति सहने को तैयर हूँ। इसलिये आप किसी आदमी को भेज दें जिससे मैं अपना काम संभला दूं। वह आ चुका है और सब काम समझाकर मैं उसे चार्ज दे चुका हूं।

तो आपको चाहिये कि आप सरकार को बधाई दें क्योंकि उसने आपको ऐसे मौके पर गिरफ्तार किया जिसमें आप के अलग होने से जमींदारी के काम में कोई नुकसान

नहीं हुआ।

खैर सरकार को हमारे नुकसान की तो कोई परवाह नहीं है, इसलिये इस ख्याल से हम तो उसे बधाई नहीं दे सकते हैं लेकिन हां। इस वक्त पर मुझे गिरफ्तर कर लेने से सरकारी की कुछ कुछ बुद्धिमानी जरूर प्रकट होती है, इसलिये आप उसे बधाई दे सकते हैं।

क्यों इस वक्त की गिरफ्तारी में ऐसी क्या खास बात है ? यही कि आज से चौथे दिन जोर शोर से धरना शुरू होने वाला था और उसकी तैयारी के लिये जबकि मैं सिर तोड़ कोशिश कर रहा था, सरकार का यह ख्याल कुछ कुछ ठीक जंचता है कि ऐन उसी मौकेपर मुझे पकड़नेसे जिसकी कामयाबी में कुछ गड़बड़ी हो जायेगी। लेकिन यह ख्याल सच नहीं है। क्योंकि आप यकीन कीजिये हम लोगों ने अब से पहले ही इतनी तैयारी कर ली है जिस पर मेरी गिरपफ्तारी का कोई बुरा असर नहीं तो हो नहीं सकता बल्कि और भी जोर शोर से काम होगा, और यही वजह थी कि तहसील देवबन्द में काफी काम हुआ देखकर ही जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान ने हमको तहसील नकुड़ में एक जत्था भेजने की आज्ञा दी थी जो अभी भी लाला बूलचन्द जी के नायकतव में प्रचार कर रहा है।

लगभग एक घण्टे में हम इस प्रकार उपरोक्त बातें करते हुए हम बहुत जल्द ही रामपुर के पास पहुंच गये। अब लगभग ६ बजे का समय था, स्कूल की छुट्टी हो चुकी थी लड़के फुटबाल खेल रहे थे। मास्टर लोग हवाखोरी के लिये बाहर निकल गये थे, सिर्फ मुन्शी गंगाराम जी स्कूल के अहाते में टहल रहे थे। मैं स्कूल के अहाते में घुसा ही था कि श्री गंगाराम जी और मेरी आंखें चार हुई। मेरे पीछे थानेदार को आते देखकर वे सब मामला समझ गये थे, फिर भी न जाने क्यों कुछ आश्चर्य चकित होकर उन्होंने पूछा-कहिये खैरियत तो है ? मैंने हंसते हुए कहा-हां खैरियत से भी खैरियत है। फिर भी ठीक बतलाइये।

दयानन्द-उपकार-स्मरण

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।

डाला, सुधार-वारि, बढ़ी बेल मेल की।
देखो समाज फूल फबीले खिला गया।।

काटे कराल जाल अविद्या-अधर्म के।
विद्या-वधू को धर्म धनी से मिला गया।।

ऊंचे चढ़े न क्रूर, कुचाली गिरा दिए।
यज्ञाधिकार वेद पढ़ने को दिला गया।।

खोली कहां न पोल ढके ढोंग ढोल की।
संसार के कुपन्थ मतों को हिला गया।।

शंकर दिया बुझाया दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल बदन में विला गया।।

ये मन्दिर बनाने वाले

-महाबीर धीर, प्रेमनगर रोहतक 9466565165

मैं एक जन्मना ब्राह्मण के पास सामाजिक कुरीतियों के अभियान में सहयोग के लिए बात करने गया था। उनके पास दो तीन आदमी और भी पहले से ही बैठे बातें कर रहे थे। मैं भी बातें करके जब उसके मकान से बाहर आया तो एक सज्जन जो पहले से ही अन्दर बैठे थे वे भी मेरे साथ बाहर निकल आये। उन्होंने मेरी सब बातें सुनी थी जो मैंने अपने मित्र से अन्दर बैठकर की थी। वे बोले आप जो समाज सुधार की बातें कर रहे थे ये ब्राह्मण उन बातों को नहीं मानेंगे। ब्राह्मण बहुत उलटे होते हैं। आप ये बातें छोड़ दो। मैंने कहा-ऐसी बात नहीं है बहुत सारे ब्राह्मण बड़े अच्छे हैं। वे समाज में अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन उस व्यक्ति ने यह बात स्वीकार नहीं की। फिर मुझ से बोले-आप पंडित जी हो। मुझे कुछ आशंका हुई कि यह जाति क्यों पूछ रहा है ? मैंने उसके मस्तक पर तिलक तथा सिर पर शिखा देखकर समझा कि यह जन्मना अवश्य ब्राह्मण कुल से है अत: मैंने झूठ ही कह दिया कि हां मैं ब्राह्मण हूं। वह बोला-आपका क्या गोत्र है ? मैंने तुरन्त कहा कि-मेरा गोत्र कौशिक है। उसने भी तुरन्त ही कहा कि अच्छा मैं भी कौशिक ही हूं। आप और बात छोड़ो, मैं बेरोजगार हूं। आप मुझे कहीं मंदिर बनवाने के लिये जगह बता दो। मन्दिर तो मैं बना लूंगा। मेरा रोजगार चल जायेगा। एक बेरोजगार ब्राह्मण भाई की रोजगार जमाने में सहायता करो। मैंने कहा-कितने ही गांव में मन्दिर खाली पड़े हैं किसी में भी जाकर बैठ जाओ। बोला नहीं दूसरे के मन्दिर में आय बढ़ते ही दूसरा कोई स्थानीय ब्राह्मण मुझे वहां टिकने नहीं देगा। आपको शायद कम पता है ये ब्राह्मण बहुत दुष्ट होते हैं। मैं अपना मन्दिर स्वयं बनाऊंगा। बस आप कहीं भी जगह बता दो। आपको बड़ा पुण्य होगा। मैंने देखूंगा ऐसा कहकर उससे विदा ली।

मेरे मस्तिष्क में पहले से ही यह बात थी कि मंदिरों में बैठे पंडितजन व पुजारी आदि कम पढ़े लिखे होते हैं। वैदिक साहित्य, दर्शन, उपनिषद् आदि का इन्हें तनिक भी ज्ञान नहीं होता। ये केवल कुछ पौराणिक प्रसंगों की जानकारी रखते हैं। ऐसे पंडित काशी मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार आदि में पौराणिक पाठशालाओं में तैयार किये जाते हैं। ये लोगों को हमेशा डराते हैं कि प्रत्येक संस्कार पर पंडित से कर्मकाण्ड नहीं कराया और पंडित को धन, वस्त्र, अन्न, माल, मिष्ठान्न धातु आदि का दान नहीं किया तो गति नहीं होती तथा फिर क्रोधित होकर हानि करते हैं। ये सभी बातें मुझे स्मरण हो आई। बेरोजगार ब्राह्मण

की रोजगार जमाने की बात सुनकर और पक्का हो गया कि ये पुजारीगण केवल अपना रोजगार धन्धा जमाए हुए हैं। इन्हें धर्म या शुभ कर्म से कोई लेना देना नहीं। यदि ये पुजारीगण धर्म का सही उपदेश देते और स्वयं धार्मिक होते तो देश में कोई समस्या ही नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक गांव या नगर के मोहल्ले में आज कई कई मन्दिर हैं। इन्होंने पूजा पाठ के कुछ ढंग निश्चित कर लिए हैं ये उन्हें ही धर्म समझते हैं तथा इनके भक्तजन भी ऐसा ही समझते हैं कि पूजा करने के बाद और कोई धर्म करना शेष नहीं रहता। अब तो भक्तजन इतने समझदार तथा पूजा के अभ्यस्त हो गए हैं कि बिना पंडित जी के ही मंदिर में जाते हैं तथा मूर्ति को पानी या दूध से धोकर उसके मस्तक पर तिलक लगा कर फूल, फल विविध अन्न आदि चढाकर अपना मस्तक मूर्ति पर नमा कर, मन में कामना अनुसार कुछ प्रार्थना करके मूर्ति की परिक्रमा करके घर आ जाते हैं और पूर्ण संतुष्ट हो जाते हैं कि धर्म पूरा हो गया है। कुछ भक्तजन तो बड़े विशेष होते हैं। घर में ही मंदिर बना लेते हैं। जो जितना धनवान् होता है उसका मन्दिर उतना ही बड़ा होता है। वह मूर्ति को मूर्ति नहीं मानता बल्किसर्वशक्तिमान् सृष्टि रचयिता भगवान् मानता है। भगवान् का सिंहासन स्थापित करता है। उस पर भगवान् को स्थापित करता है। पंडित को बुलवाकर मूर्ति में प्राण डलवाए जाते हैं फिर प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है। यानी की मूर्ति में प्राण चालू हो जाते हैं। वह श्वास प्रश्वास लेती और छोड़ती है। वह सब कुछ देखने लगती है तथा सबके मन को भी जानती है। सबकी मनोकामना पूरी करती है। सबकी रक्षा भी करती है। दुष्टों को मारती है। भक्तजन मूर्ति को खाना भी खिलाते हैं। कहते हैं कि सबको खिलाने वाला भूखा नहीं रहना चाहिये। उसे खिलना हमारा कर्त्तव्य है। पहले भगवान् को खिलाकर तभी हम खाते हैं। पता नहीं लगता कि भगवान् दुनिया के जीव जन्तुओं को खिलाता है या भक्तजन खिलाते हैं। यदि भगवान को भक्तजन न खिलाएं तो अवश्य भगवान् भूखा रहता होगा। ऐसा भी हो जाता होगा कि भगवान् को कोई कुछ न खिलाये तो वह मर भी जाता होगा। बंगला देश में, पाकिस्तान में कश्मीर में मन्दिरों को तोड़ा गया तो भगवान् को भी तोड़ा गया होगा तब तो भगवान् मर ही गया होगा। लेकिन कहीं न कहीं तो भगवान् दूसरे मन्दिरों में घरेलू मन्दिरों में जिन्दा रहता ही है। लेकिन ये भगवान् तो बहुत सारे हैं। मरते भी रहते हैं और बनते भी रहते हैं। आप कितने भी भगवान् बाजार से ले आओ सब प्रकार के भगवान् बाजारों में मिल जाते हैं। बाजार में भगवान् के बिछौने, ओढने, गर्मियों के लिए कूलर, सर्दियों के लिये गर्म कपड़े, रजाई, मच्छरदानी सब मिलती हैं और दयालु भक्तजन भगवान् पर परम दया करके उसे सब वस्तुएं अपने खर्चे से लाकर देते हैं। नहीं तो भगवान् भूखों मरें और सर्दी गर्मी में भी मच्छरआदि से मलेरिया डेंगू

आदि बुखार से भी मरें। ये तो दयालु भक्तजन हैं जो भगवान् को बचाए हुए हैं।

एक मन्दिर के पुजारी बोले श्री कृष्ण भगवान् वृन्दावन के एक मन्दिर में मंजन करके जाते हैं। मैंने पूछा कि भगवान् मंजन ही करके जाते हैं या स्नान ध्यान खान-पान या टट्टी पेशाब भी करके जाते हैं या दूसरे नित्यकर्म अलग-अलग मंदिरों में करते हैं। पंडित जी कोई जवाब नहीं दे पाये। कितने ही मंदिर तोड़े गए। भक्तजन मारे गए। किसी भी देवी देवता या मन्दिर के भगवान् ने किसी की रक्षा नहीं की फिर भी बार-बार मन्दिर बनाकर मंदिरों में भगवानों को बैठाकर खिलाया पिलाया जाता है। भले ही वे खाएं या न खाएं। उन्हें सुलाया और जगाया जाता है। भले ही वे सोएं या न सोएं। और सोएं ही नहीं तो जागेंगे क्या? लेकिन जगाया सुलाया नित्य जाता है। सोने के बाद भगवान् को तालों के भीतर रोक दिया जाता है। क्या गजब का खेल भक्तजनों ने रचाया है। बड़े-बड़े राजनेता अभिनेता, सेठ, साहूकार, गरीब अमीर सब मंदिरों, मस्जिदों में जाकर शक्ति पा रहे है। सोने, चांदी के छत्र, धन अन्न मन्दिरों में जमा हो रहे हैं। गली गली घर घर मंदिर बन जाएं तो सबकी बेरोजगारी दूर हो जाए लेकिन बेरोजगारी कुछ लोगों की दूर हो रही है सबकी नहीं हो रही।

देश में मंदिर निर्माण जोरों पर है। अयोध्या में ही 2000 एकड़ उपजाऊ भूमि पर ईक्ष्वाकुपुरी बसेगी 251 मीटर ऊंची श्री राम की प्रतिमा बनेगी। 67 एकड़ में राम मंदिर बनेगा। कुरुक्षेत्र में पहलेही बहुत मन्दिर हैं अब बड़े बड़े और मन्दिरों का निर्माण किया जा रहा है। छः एकड़ में इस्कान द्वारा श्री कृष्ण अर्जुन मन्दिर बनाया जा रहा है 600 करोड़ व्यय इस पर होगा। दूसरा मन्दिर तिरुपति जी वेंकटेश्वर 50 करोड़ की लागत से बनाया जा रहा है। तीसरा मंदिर ब्रह्म सरोवर के मध्य ज्ञान मन्दिर नाम से 125 करोड़ रुपये के व्यय से 18 मंजिला बनेगा। चौथा मंदिर ब्रह्म सरोवर के किनारे नौ एकड़ में बन रहा है। इसका नाम है गीता ज्ञान संस्थानम। यहां गीता पर शोध होगा। इंडोनेशिया में 70 श्लोकों की गीता ही मान्य है जबकि भारत में 700 श्लोकी गीता चल रही है। समझ नहीं आता गीता पर क्या शोध होगा? क्या आज तक गीता पर शोध नहीं हुआ हैं? इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र में ही भारत माता मन्दिर पांच एकड़ में हरियाणा सरकार द्वारा केन्द्र सरकार के सहयोग से बनेगा। ये मन्दिर तो हरयाणा सरकार की अनुमति से कुरुक्षेत्र में ही बनाए जा रहे हैं यदि भारत की बात करें तो हरेक नगर में कई कई निर्माणाधीन मंदिर मिल जाएंगे। हरियाणा सरकार तो मन्दिर निर्माण पर तुली हुई है। यमुनानगर के आदि बद्री में सरस्वती नदी प्रवाह की खोज में अनुमानित प्रवाह पर मन्दिर बना दिया गया है।

- अनुमानित प्रवाह पर मन्दिर बना दिया गया। लगातार पूजा हो रही है कुछ व्यक्तियों

को सरस्वती (नदी) माता के आशीर्वाद से मन्दिर में रोजगार मिल गया है। ऐसा कहा गया है। क्या सरस्वती माता के आशीर्वाद से वहां सरस्वती नदी उमड़ कर बहने लगेगी? मुख्यमंत्री जी बड़े ही धार्मिक हैं। करनाल के फरीदपुर गांव में शिवलिंग व नंदी शिला मिलने पर झट उनकी पूजा कर आए। संभावना है वहां जल्दी ही मन्दिर बन जाएगा। प्रतिवर्ष यमुनानगर के बड़े क्षेत्र में डूबने से भारी हानि होती है। वह प्रवाह ही नहीं संभाला जा रहा है एक ओर खेत सूखे रह जाते हैं, फ़सलें हो नहीं पातीयां सूख जाती हैं। दूसरी ओर डूबकर फसलों सहित मनुष्य पशु जीव जन्तु मरते रहते हैं। भारत के भूगोल शास्त्री डा. विश्वेश्वरैया ने पहाड़ नदी नालों और धरातल को मापकर नदी जोड़ने का सुन्दर मानचित्र स्वतंत्रता से पूर्व ही नेताओं को प्रस्तुत किया था। उन्होंने दावा किया था कि मानचित्र के अनुसार नदी जोड़ने से भारत में डूब और सूखा नहीं होंगे। हरी भरी मातृभूमि अन्न धन औषधीय वन उपवन व दूध आदि से भरपूर रहेगी। बेरोजगारी नहीं रहेगी। कृषि ऋषि की संस्कृति विकसित होगी लेकिन कोई भी सरकार इस ओर ध्यान न देकर पहाड़ तोड़ कर सड़क भवन कालोनी मंदिर बना रही हैं। कार स्कूटर ट्रैक्टर बनाकर भयंकर प्रदूषण व दुर्घटनाओं द्वारा मानव, पशु व प्रकृति को नष्ट किया जा रहा है। मंदिरों में सोना चांदी तथा अरबों खरबों रुपये इकट्ठे हो रहे हैं लेकिन समाज में लगातार अधर्म, अपराध, नशे, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी बढ रही है क्या आपके मंदिर जन जन को धार्मिक बना पाए?

दो हजार एकड़ में 50,000 करोड़ से अयोध्या में सचमुच धार्मिक नगरी बनेगी?

धार्मिक नगरी तो उसे ही कहा जा सकता है जहां धर्म ही हो अधर्म, अपराध, नशा, अश्लीलता, अकर्मण्यता न हो। क्या सचमुच कुरुक्षेत्र या अयोध्या ऐसी बनेगी? केवल यहां वहां मन्दिरों में घंटे घड़ियाल बजेंगे, पूजा अर्चना होगी, रासलीला, नृत्य गान होंगे। कथा भजन होंगे। साधु सन्त ऊंची ऊंची मूर्तियों के नीचे बैठकर सुल्फा पीयेंगे और चढावा खायेंगें। सरकारी नीति से शराब ठेके भी खुलेंगे? मांस अण्डों की दुकानें भी कहीं न कहीं बन ही जायेंगी? या शराब मांस को धर्मनगरी में अपराध घोषित किया जाएगा? कुछ पता नहीं। अभी तक तो यही देखने में आ रहा है कि तीर्थ स्थानों पर ही सबसे ज्यादा नशे व अपराध होते हैं। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री डा० नीलकंठ तिवारी ने अयोध्या में 200 कमरों के होटल के लिए भूमि चिन्हित करने के निर्देश दिए हैं। यह सभी जानते हैं कि होटलों के खानपान और रहन-सहन कैसे होते हैं? नव विवाहित जोड़े और प्रेमी जोड़े पर्यटन स्थलों पर कोई अखण्ड पाठ या अखण्ड यज्ञ करने नहीं जाते। यह मंत्री, अधिकारी, कर्मचारी व जन साधारण सब जानते हैं? क्या धर्मनगरियों में ऋषि मुनि मिलेंगे जो यात्रियों व पर्यटकों को दिव्य ज्ञान देंगे? या पर्यटक और भक्तजन देवी देवता

अपना मूल्य जानें – स्वयं को पहचानें

कठिनाइयां किसके जीवन में नहीं आती? हर कोई इससे जूझता है, लेकिन हर किसी के जूझने का तरीका भिन्न होता है। कोई इन्हें हंसी खेल समझकर ज़ूझता है, कोई इन्हें शांति के साथ स्वीकारता है और उनका समाधान ढूंढता है तो किसी के लिए इनसे जूझना ही संभव प्रतीत नहीं होता। भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण व मन:स्थिति के साथ व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से निपटना चाहता है लेकिन बदले में ये परिस्थितियां उसे क्या देकर जाती हैं? जो भी व्यक्ति इन्हें अत्यधिक तनाव की तरह लेते हैं, उनके जीवन की सुख शांति खो जाती है केवल परेशानियां ही परेशानियां दीखती प्रतीत होती हैं। वे इन कठिनाइयों को पार करने में आंशिक सफलता प्राप्त करते हैं और जो इन्हें शांति व प्रसन्नता से स्वीकार करके अपनाते हैं, बिना किसी तनाव व शांतिपूर्ण तरीके से जूझते हैं, वे न केवल इसमें सफल होते हैं, बल्कि जीवन के गंभीर अनुभवों के सहभागी बनते हैं। जो हंसी खेल की तरह इन्हें लेते हैं, उनका जीवन हंसी खुशी से भर जाता है।

शेष अगले पृष्ठ पर...

पिछले पृष्ठ से आगे....

और भगवान् कहे जाने वाली मूर्तियों पर कई लाख की चद्दरें करोड़ों के स्वर्ण मुकुट, अन्न, धन, वस्त्र, धातु आदि चढाकर उन्हीं से ही आशीर्वाद लेकर संतुष्ट व कृतकृत्य होकर घरों को प्रसन्न होकर लौटते रहेंगे?

गीता महोत्सव ही क्यों? वेद महोत्सव क्यों नहीं? सरकारें गीता महोत्सव [illegible] प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय, [illegible]द्यालय, प्रत्येक नगर तथा विदेशों में भी करोड़ों अरबों रुपये व्यय करके मना रही है। श्री कृष्ण ने 10-15 मिनट के लगभग अर्जुन को यही तो समझाया था कि जो भाई तुझे सूई की नोक के बराबर भूमि भी नहीं देना चाहते? लाक्षा गृह बनाकर मारना चाहते थे उन्हें तू भाई बन्धु मोहवंश समझ रहा है। वे तो तेरे तथा राज्य के शत्रु हैं। क्षत्रिय का धर्म शत्रु को मारना है उठ खड़ा हो। मरेगा तो स्वर्ग में जायेगा विजयी होगा तो राज करेगा। इतनी सी बात [illegible] लिए इतना तामझाम। और मानवता तथा देवत्व ज्ञान के भण्डार वेदों का नाम ही नहीं लेते। फिर गीता महोत्सव से कितना धर्म समाज में बढ़ा या अधर्म ही बढता जा रहा है। महोत्सव मना दिया धर्म बढा नहीं। हिन्दी सत्याग्रहियों को पेंशन दे दी लेकिन हिन्दी को बढाया नहीं? गौ रक्षा को मुद्दा बनाया लेकिन गोपालन बढाया नहीं? बैल से खेती करने वाले और गाय रखने वाले की पेंशन नहीं की। विधायकों, सांसदों की कई कई पेंशन व भत्ते बढा दिए। पहली से संस्कृत नहीं लगाई अंग्रेजी लगा दी क्या यही धर्म है?

जीवन में समस्याएं तब उठ खड़ी होती हैं, जब हम अपने मन की शांति व स्थिरता खो देते हैं और अहंकार की चाल चलने लगते हैं। ऐसी स्थिति में हमें अपनी वास्तविक मंजिल ठीक से दिखाई नहीं देती, बल्कि अहंकारवश प्रतिष्ठा व यश की भ्रमयुक्त दीवार ही दीखती है और फिर हम हैरान परेशान होकर उस ओर दौड़ते चले जाते हैं। यदि हमें वह भी नहीं मिलती, तो हमारी अशांति घटती नहीं, बल्कि दुगुनी बढ़ जाती है। हमारा अहंकार चोट खाए हुए सर्प की तरह फुंफकारता है क्रोधित वचन कहता है, तिलमिलाता है। जो मंजिल उसे शांति के रास्ते पर चलकर आसानी से मिल सकती है-अहंकार में अन्धा होने पर उससे कोसों दूर हो जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में जब भी व्यक्ति की मुश्किलें बढ़ती हैं तो उसका न केवल मन, अपितु उसका शरीर भी विकृत दशा में जाने लगता है उसे न केवल अपना चेहरा अच्छा नहीं लगता अपितु उसका व्यवहार भी बिगड़ता लगता है। अपने व्यवहार से भी वह क्षुब्ध हो जाता है। उसे कभी अपने ही फैसलों पर गुस्सा आता है तो कभी लगता हैकि वह किसी चीज के लायक ही नहीं है। आत्महीनता व असुरक्षा की भावना उसके मन में बस जाती है, आदत में शामिल होने लगती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए अमेरिकी लेखिका लुई हे कहती है कि पिछले लंबे समय से जो व्यक्ति अपने को कोस रहे हैं उन्हें कुछ भी फायदा नहीं हुआ, वे खुद को स्वीकारना शुरू करें और फिर देखें कि क्या बदलाव आता है।

जीवन में जब अहंकार का प्रवेश हो जाता है, तो हम जीवन की वास्तविकता को ही स्वीकारना भूल जाते हैं और तरह तरह के भ्रमों का शिकार होते हैं। अपनी वास्तविकता से दूर भागते हैं और दुनिया की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ-सर्वोत्तम बनना चाहते हैं। हमें हमारे आधार का ही पता नहीं होता और हम शिखर पर पहुंचना चाहते हैं। इसलिए सबसे पहले व्यक्ति को अपनी वास्तविकता से रूबरू होना चाहिए। हमारी जो भी कमियां हैं, उन्हें स्वीकारना चाहिए, जो भी गलतियां हैं, उन्हें मानना चाहिए और उन्हें सुधारने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

हमारे जीवन से शांति छिन गई, सुकुन गायब हो गया है, क्योंकि इस अहंकार के वशीभूत होकर लगतार हैरान परेशान होकर काम में लगे रहते हैं। समस्याओं को देखकर अपनी शांति खो बैठते हैं। गलतियां व कमियों पर ही सदैव ध्यान आकर्षित करते हैं और नाराजगी व बहस में ही अंपने अधिकांश समय को व्यर्थ करते हैं। इस बारे में अमेरिकी लेखक विलियम ऑर्थर वर्ड कहते हैं कि व्यक्ति की समझदारी इसी में है कि वह अपने गुस्से को समस्या की ओर ले जाए, न कि लोगों की तरफ। अपनी ऊर्जा वह समस्या के समाधान की ओर लगाए, बहानों पर नहीं।

जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थितियां

आएं, कितने उतार--चढ़ाव आएं, यदि हम शांति के साथ परिस्थितियों को सुलझाना, उनसे निपटना सीख जाते हैं तो उसी क्षण से हम शांति के दूत बन जाते हैं।

अक्सर हम ऐसे व्यक्तियों से घिर जाते हैं या घिरे हुए से होते हैं, जो अशांत मन:स्थिति वाले होते हैं, ऐसे लोग जीवन के कई तरह के थपेड़े खाते हुए होते हैं। ऐसे लोगों के बीच भी हमें अपार शांति से रहना है तो सेन्ट फ्रांसिस की इस बात को सदैव याद रखना होगा कि तनाव से भरे क्षण हमें यह महसूस कराते हैं कि आपको शांति किसी अन्य व्यक्ति से नहीं मिलने वाली, बल्कि जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए आपको उसे स्वयं ही चुनना होगा, हाँ शांति के मार्ग का चुनाव व फैसला जब तक हमारा स्वयं का नहीं होगा, तब तक हम इसे न तो अपना सकेंगे और न ही इस पर चल सकेंगे। इस बात का भी हमें ध्यान रखना होगा कि हमारी चैतन्यता शांतचित्त रहने का मार्ग जानती है, जरूरत है तो सिर्फ हमें सहज रहने व प्रेम, करुणा और क्षमा जैसे भावों को सहृदयता से अपनाने की।

(श्री पालवाल जैन पत्रिका दिसंबर२०१९ से साभार)

शोक सन्देश

परोपकारिणी सभा अजमेर के पूर्व प्रधान और वर्तमान में संरक्षक श्री गजानन्द जी आर्य का 6 जनवरी 2020 को बंगलौर में निधन हो गया। वे लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। गुरुकुल झज्जर परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति और शोकसंतप्त परिवार के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

ग्राम पलड़ा निवासी श्री महाशय धर्मदेव जी का 86 वर्ष की आयु में 16 जनवरी 2020 को निधन हो गया। इनकी अन्त्येष्टि 17 जनवरी को वैदिक विधि से गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया।

26 जनवरी 2020 को शांतियज्ञ आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर द्वारा करवाया गया और आत्मा की अमरता तथा शरीर की अनित्यता सम्बन्धी उपदेश देकर शोकाकुल परिवार को धैर्य बन्धाकर दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

-सम्पादक सुधारक

॥ ओ३म् ॥

Your child's bright future with Bharteey Culture ....

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

SHIVALIK गुरुकुल

A Modern C.B.S.E. Pattern Residential School Only for Boys

"शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, सेवा"

आचार्य नन्दकिशोर
(निदेशक)

मूलभूत सुविधाएँ

❖ शहर के शोरगुल से दूर 16 एकड़ के विशाल परिसर में स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त वातावरण ❖ आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल एवं हवादार कक्षा-कक्ष ❖ अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत प्रशिक्षण के लिए भाषा प्रयोगशाला ❖ सभी विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय ❖ CCTV कैमरे से युक्त छात्रावास एवं विद्यालय ❖ आधुनिक उपकरणों से युक्त शूटिंग रेंज ❖ घुड़सवारी ❖ नियमित अध्यापक-अभिभावक मीटिंग ❖ अत्याधुनिक Computer प्रयोगशाला ❖ SMS द्वारा सूचना प्रेषण ❖ सुसज्जित रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, गणित, सामाजिक और विज्ञान प्रयोगशालाएं ❖ समर्पित एवं अनुभवी स्टाफ ❖ संगीत कक्ष ❖ गुरुकुल App के माध्यम से छात्रों की दैनिक शैक्षिक एवं उपस्थिति जानकारी ❖ सभी सुविधाओं से युक्त वातानुकूलित छात्रावास ❖ विभिन्न खेल प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों की व्यवस्था ❖ प्रतिदिन सन्ध्या-यज्ञ के लिए यज्ञशाला ❖ विस्तृत व हरे-भरे खेल के मैदान।

FEE STRUCTURE

Class	Amount
4th to 6th	1,25,000/-
7th to 8th	1,30,000/-
9th to 10th	1,35,000/-
11th*	1,45,000/-

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से ग्यारहवीं
Class IV to XI
(Medical, Non Medical, Commerce)
2020-21

VILL. ALIYASPUR, P.O. SARAWAN, MULLANA, AMBALA-133 206 (HARYANA)

shivalikgurukul.ambala@gmail.com • www.shivalikgurukul.com

Admission Helpline : 9671228002, 9671228003, 8813061212, 8295896525, 9053720871

Facebook@ShivalikGurukul Please Like, Share and Subscribe our School Youtube Channel Shivalik Gurukul for Videos and More Updates

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् । अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम् ।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से सम्बद्ध (मान्यता प्राप्त) आर्षपाठविधि के निःशुल्क शिक्षाकेन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

104 वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22-23 फरवरी 2020 ई०

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि पर्व पर गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव फाल्गुन चतुर्दशी, अमावस्या 2076 वि० तदनुसार 22-23 फरवरी, शनिवार, रविवार को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु-संन्यासी और राज्य सरकार के राजनेता पधार रहे हैं। अतः निवेदन है कि परिवार और इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्म का लाभ उठायें तथा महोत्सव की शोभा बढ़ायें।

अथर्ववेदपारायण महायज्ञ

महोत्सव के निमित्त 14 फरवरी शुक्रवार से अथर्ववेदपारायण महायज्ञ प्रारम्भ किया जायेगा। इसके लिए घृत, सामग्री और समिधा का दान आना भी प्रारम्भ हो चुका है। प्राणिमात्र के कल्याणकारी इस पवित्र यज्ञ में घृत, सामग्री, गूगल, समिधा आदि के रूप में आप सभी का सहयोग वांछित है। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें जिससे उनकी व्यवस्था की जा सके।

व्यायाम प्रदर्शन

22 फरवरी, शनिवार के दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया जायेगा जिनमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखंभ, लाठी, भाला, तलवार, धनुषबाण, लोहे के सरिये को गले से मोड़ना, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य के बल से जीप रोकना आदि होंगे।

सूचना : -

1. गुरुकुल की स्वामिनी 'विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर' का साधारण वार्षिक अधिवेशन 22 फरवरी को रात्रि के 8 बजे प्रारम्भ होगा। सभी सदस्य समय पर पधारें।
2. 2100 रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों, समाजों और ग्रामों के नाम पत्थर पर अंकित किये जायेंगे।
3. 21000 रु० वा इससे अधिक दान देने वालों के नाम का अलग से पत्थर लगेगा।
4. एक लाख वा इससे अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से पत्थर तथा चित्र गुरुकुल के प्रमुख स्थल पर लगाया जायेगा।
5. ऋतु अनुकूल वस्त्र, बिस्तर साथ अवश्य लायें। भोजन तथा आवास पर प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

निवेदक

आचार्य विजयपाल
आचार्य
9416055044

राजवीरसिंह
मन्त्री
9811778655

पूर्णसिंह देशवाल
प्रधान
8053178787

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____